हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-६ अङ्क-११ जून, २०१०

सम्पादकीय

बच्चों के प्रति माता-पिता का उत्तरदायित्व

एक समय था, जब पिता का काम परिवार के लिये धन-अर्जित करना और माँ का काम परिवार की देखभाल करना हुआ करता था; माँ बच्चों को प्यार देती थी और बाप अनुशासन। पर अब स्थिति बदल गयी है। आज अधिकतर परिवारों में माँ-बाप दोनों कमाते हैं और घर के काम-काज में हिस्सा बँटाते हैं। महिला आंदोलन की सफलता के बावजूद, घर का अधिकतर काम महिलाएँ संभालती हैं। परंतु आधुनिक समाज में माता-पिता का उत्तरदायित्व भी बदल रहा है। कामकाजी परिवारों में बच्चों के लालन-पोषण के लिये माता-पिता को बहुधा शिशु-देखभाल केन्द्रों अथवा परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर करना पड़ता है। मीडिया तथा संचार प्रौद्योगिकी में हुए क्रांतिकारी परिवर्तन भी बच्चों के साथ माँ-बाप के सम्बंधों और उनके उत्तरदायित्व को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे में, बच्चों का उचित प्रकार से लालन-पोषण करना, उन्हें उचित मार्ग-दर्शन देना जटिल काम बन गया है। नये माता-पिताओं के प्रशिक्षण के लिये कक्षाएँ लगने लगी हैं। उनकी सहायता के लिये अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं परंतु कोई भी पुस्तक या कक्षा उन्हें पूरी तरह से जीवन में माता-पिता की भूमिका निभाने के लिये तैयार नहीं करती है। ये उपयोगी अवश्य हैं, परंतु जीवन के अनुभव, अनेक वे बातें सिखाते हैं, जिन का उल्लेख, इन पुस्तकों में नहीं होता है। सभी माता-पिताओं को जो बच्चों के उचित लालन-पोषण, मार्ग-दर्शन तथा अनुशासन सम्बंधी समस्याओं से जूझ रहे हैं, हमारी शुभकामनाएँ। जिन देशों में पितृ-दिवस २० जून को मनाया जाता है, उन देशों में रहने वाले सभी पिताओं को पितृ-दिवस की बधाई।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में विविध विषयों पर कुछ रोचक कविताएँ हैं। इसके अतिरिक्त, भारत के बारे में में उक्रेन निवासी एक महिला का लेख है और 'पदोन्नति' नामक कहानी का छठा भाग है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा 'सूचनाएँ' स्तम्भ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

प्रकाशन सम्बंधी सूचनाए

हिन्दी-पुष्प का उद्देश्य ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाता है। हिन्दी-पुष्प में प्रकाशित रचनाओं में लेखकों के विचार उनके अपने होते हैं, उनके लिये सम्पादक या प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं। हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से 'हिन्दी-संस्कृत' फ़ांट में रचनाएँ भेजें तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।
कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजें-

Editor, Hindi-Pushp, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121).
ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है -
dsrivastava@optusnet.com.au

अपनी रचनाएँ भेजते समय, अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखें।
हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से 'हिन्दी-संस्कृत' फ़ांट में रचनाएँ भेजें तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक

काव्य-कुंज

विश्वास

- रेखा राजवंशी, सिडनी

भाषा में शब्द नहीं,
शब्दों में अर्थ नहीं
अर्थों में तत्व नहीं
किस पर विश्वास करें?

भजनों में भक्ति नहीं,
मंत्रों में शक्ति नहीं,
शक्लों में व्यक्ति नहीं
किस पर विश्वास करें?

सुर में संगीत नहीं,
सावन में गीत नहीं,
अपने अब मीत नहीं
किस पर विश्वास करें?

गीतों में छंद नहीं,
फूलों में गंध नहीं
सच्चे सम्बन्ध नहीं
किस पर विश्वास करें?

अपना-पराया

- हेमानी किरण, मेल्बर्न

क्या है सच, क्या है सपना
वक्‌त चला था सियासी चाल
सोचिए, कौन पराया, कौन है अपना

जब रहते थे हम भारत देश
सरहद की लकीर के पार थे वे
अजनबियों का था भेष

नफ़रत भी थी, अलगाव था
लेबल था धर्मों का
कोई हिन्दू, सिक्ख; कोई मुसलमान

कभी बाबरी, कभी कारगिल
क्रिकेट का मैदान भी मानो
जंग का ही मैदान था

अब हम सभी परदेसी हो गये
दुनिया के दक्षिणी गोलार्ध में आ कर
हमदर्द, हमनसल, हमज़ुबाँ हो गये

दुश्मन से हम दोस्त बन गये
हिन्दुस्तानी, पाकिस्तानी थे हम
भाई अब, लेबल 'देसी' हो गये।

एक श्रद्धांजलि

(स्वर्गीय श्रीमती चन्द्रा गोविल की स्मृति में)

-प्रकाश गोविल, मेल्बर्न

तुम तो प्रिये स्वर्ग की देवी थीं,
फिर धरती पर क्यों जन्म लिया
निर्धारित कार्य पूर्ण कर के
प्रस्थान परम धाम को किया

तुम स्वर्ग के द्वार खुले रखना,
इंतज़ार मेरा करती रहना
फिर कभी नहीं बिछुड़ेंगे हम,
क्षण भर को जुदा नहीं होंगे हम

मेरे जीवन की बगिया में,
तुम पुष्प खिला कर चली गईं
मीठे फल लगने से पहले,
उपवन को छोड, कर चली गईं

पहचान हम तुम्हारा दुःख न सके,
पीड़ा भी न बाँट तुम्हारी सके
तुम राम को भजते चली गईं,
राम-राम ही जपते चली गईं

कस्में जितनी भी खाई थीं,
वे सभी निभा कर चली गईं
दु:ख, सुख में सभी का साथ दिया,
क़ुर्बान कर, सब कुछ चली गईं

जब गईं, तुम्हारे चेहरे पर,
एक अमर ज्योति लहराई थी
नयनों में था अनुराग और,
मुस्कान अधर पर छायी थी

माथे सुहाग की बिन्दी थी,
सिंदूर से माँग सजी हुई थी
तुम भाग्य सराहते चली गईं
हम भाग्य कोसते रहे वहीं

अस्थियाँ तुम्हारी पा करके
पावन हो गई यारा नदिया
क्षण भर को लगा कि मेल्बर्न में,
हो गई प्रगट गंगा-मय्या

आत्मा को तुम्हारी शान्ति मिले,
प्रभु से हमारी विनती है
आवागमन-चक्र से मुक्ति मिले,
अन्त:करण से दुआ ये निकलती है

वे मात-पिता हैं धन्य जिन ने,
तुम समान कन्या जाई
मेरे जीवन में आ जिसने
सुख, समृद्धि की ज्योति जगमगाई

निकल कन्दराओं से

- हरिहर झा, मेल्बर्न

निकल कन्दराओं से,
मैंने लिखे वेद-उपनिषद
वात्स्यायन के कामसूत्र,
सूर, तुलसी, मीरा के पद

सोच रहा नवनीत ज्ञान का
पास है फिर भी दूर
पा न सकूँ पर यत्न किये जाने पर
हूँ मज़बूर
जीवन क्या? मृत्यु क्या?
क्यों बंधन हैं इस काया के
मोक्ष मिले तो कैसे?
कब छूटें चक्कर माया के

अहं ब्रह्म को याद किया
दिल हुआ हर्ष से गद्‌गद
निकल कन्दराओं से,
मैंने लिखे वेद-उपनिषद

देवपुत्र होने का मुझको
चढ़ा कभी अभिमान
डारविन की खोज कहे मैं
बन्दर की संतान
त्याग-तपस्या ब्रह्मचर्य को
जब आदर्श बनाया
खग-मृग जैसी कामवासना
फ्रायड ने बतलाया

कीट-पतंगों सा जीवन नर-जीवन
नीत्शे न कर दी हद
निकल कन्दराओं से,
मैंने लिखे वेद-उपनिषद

कहाँ ज्ञान को सरल बनाने
कथा लिख डाली
'राम-राम' रट छुरी बगल में,
बस आडम्बर खाली
शब्दों के रेशों की डोरी,
खुद को बंधता पाया
हर पुस्तक जंजीर बनी
कारागृह मन को भाया

पोथी लिख-लिख हुआ मुझे
लो ब्रह्मा होने का मद
निकल कन्दराओं से,
मैंने लिखे वेद-उपनिषद

Trial version www.scansoft.com

भारत जहाँ मेरा दिल बसा है

-तान्या चौहान, उक्रेन

भारत समान कोई अन्य देश नहीं है और कभी हो भी नहीं सकता और आप सोचते होंगे क्यों? किसी से भी पूछिये जो भारत में रहा है। उसके दिल के कहीं भीतर सदैव भारत का एक अंश मिलेगा। शायद यह आपका रोमानी भाव, प्रेम, आपकी धार्मिकता, आपके गुण और आपके भीतर जो सब कुछ निर्मल व भावात्मक है ... इस सभी का श्रेय भारत को जाता है इसीलिये भारत अतुल्नीय है।

मेरा जन्म **उक्रेन** में हुआ था और मैने वहाँ अपनी शिक्षा प्राप्त की। अपनी माँ की मृत्यु के बाद मैं बहुत एकाकी महसूस कर रही थी कि तब भारत आने की एक ललक ने मुझे अभिभूत कर दिया। मैं न जाने कब से भारतीय फिल्में देख रही थी, भारतीय संगीत सुन रही थी और भारतीय वस्त्र पहन रही थी। मैंने एक बार ईश्वर से प्रार्थना भी की, "मैं अपना सब कुछ गँवाने और भारत तक नंगे पाँव यात्रा करने के लिये तैयार हूँ। मैं वहाँ रहना चाहती हूँ और हमेशा के लिए भारतीय बनना चाहती हूँ ..." तब मैं १६ वर्ष की थी।

ईश्वर ने मेरी सुनी और मैंने १० वर्ष से अधिक समय भारत व भारतीयों के बीच गुज़ारे, मैंने स्वयं को एक भारतीय समझा और तब मुझे बहुत बुरा लगता है जब कोई मुझे ग़लत सिद्ध करता है। ऐसा इसलिये क्योंकि भारत मेरे दिल में बसा है, मैं स्वयं को भारत से अलग कर के सोच भी नहीं सकती।

मैं ६ वर्ष तक दिल्ली में रह चुकी हूँ। मैने भारतीय (पंजाबी भी) व्यंजन बनाने सीखे हैं। मैंने अनेक सुन्दर स्थान देखे, और मैं विभिन्न धर्मों व सामाजिक स्तर के लोगों से मिली हूँ। मैं उनसे बातचीत करना, उनसे घुलना-मिलना और उनकी जीवन शैली सीखना चाहती हूँ। मुझे कोई भी बाहरी व्यक्ति नहीं समझता। किसी ने भी मुझे 'अँग्रेज़' (सफेद चमड़ी वाले पश्चिमी देशवासी के लिये सम्बोधन) नहीं किया।

हालाँकि मैं एक रूढ़िवादी ईसाई हूँ पर मैं सभी भारतीय देवी-देवताओं को मानती हूँ। मेरे घर के मन्दिर में सदैव एक अगरबत्ती सुगन्ध फैलाती रहती है। मेरा मानना है कि ईश्वर एक है चाहे वह ईशू, अल्लाह, बुद्ध, शंकर या सिक्ख गुरू हो। संसार में कहीं भी ईश्वर मनुष्य के इतना करीब नहीं है। वैष्णव देवी के पर्वतों, हरिद्वार में गंगा की पवित्र जलराशि, अमृतसर का स्वर्ण मन्दिर, कोई मस्जिद या सड़क के पास बना छोटा मन्दिर सभी में बसा ईश्वर आपसे वार्तालाप करता है और आपको प्रेम व सुरक्षा का भाव प्रदान करता है। ऐसा और कहाँ मिल सकता है।

कई लोग कहते हैं "भारत एक गंदा, गरीब, प्रदूषित और भ्रष्टाचार से ग्रस्त देश है।" हाँ, यदि आप केवल उसे देखते भर ही हैं तो। चमकीली सफ़ारी कमीज़, कटी जींस और सैंडिल पहने महीनों से बगैर सिर धोये कैमरा लिये हर राज्य की यात्रा करके और केवल गायों तथा भिखारियों की फोटो खींच कर सोचें कि आपने भारत देखा है तो आपका कहना ठीक ही होगा।

दूसरी ओर आप एक साड़ी पहनें, उसके रेशमी एहसास को महसूस करें या सफ़ेद कुर्ता-पायजामा पहनें और प्रात: छ: बजे उठें जब क्षितिज पर भोर की लाली फैली हो व हवा खुशनुमा हो, ठंडे जल से स्नान करें, नंगे पांव मन्दिर में प्रवेश करें और सदियों प्राचीन संगमरमर की ताज़गी महसूस करें, शिवलिंग पर दूध व पुष्प चढ़ायें और वहाँ रुक कर आरती सुनें ... अपने हर स्वप्न को याद रखें जिससे वह साकार हो जाये ... मेरे विचार से तब आप भारत को जान पायेंगे।

*** इण्डिया पर्सपेक्टिव्ज, के सौजन्य से**

पदोन्नति* (भाग ६)

-श्रीनिवास वत्स

(आपने इस कहानी के पिछले भागों में पढ़ा कि पदोन्नति के बाद, अन्य सरकारी अधिकारियों को देख कर, सुनन्दनजी को लगा कि कुत्ता पालना बड़प्पन की निशानी है। गाँव से शहर लौटते समय सुनन्दन को गाँव की गली में एक सुंदर कुतिया दिखायी दी, जिसे वे अपने साथ ले आये। उन्होंने सोचा कि वह गाँव की कुक्करी है, जैसा रूखा-सूखा वे देंगे, खा लेगी। पर उसे बंधन रास नहीं आया और वह (मिस फ्लूडी) रात भर चिल्लाती रही और पड़ोसियों की नींद हराम कर दी। मकान मालिक रात-भर बड़बड़ाता रहा-"पता नहीं कहाँ से आफ़त ले आए? दो दिन में इन लोगों को ऐसी हवा लगी है, पूछो मत। लीजिये, अब आगे की कहानी पढ़िये - सम्पादक)

किराया बढ़ाने की बात करता हूँ तो मिमिया उठते हैं। वैसे प्रदर्शन ऐसा कि क्या करेगा कोई लखपति!"
आवाज, सुनंदन जी के कानों तक पहुँच रही थी पर वे चुप ही रहे। करें भी क्या? इतना सस्ता मकान कहीं मिलता भी तो नहीं!

सुबह उठ कर देखा तो परेशानी और बढ़ गई। पूरे बरामदे में जगह-जगह कुक्कुरी के मल-मूत्र की दुर्गंध आ रही थी। अरे! यह तो सोचा ही नहीं था। मकान-मालिक ने देख लिया तो आज ही खाली करा लेगा। सूरज निकलने से पहले सारा फर्श धोना पड़ा।

महावीर पार्क में मेजर ने सुनंदन जी को कुतिया के साथ आते देखा तो आगे बढ़कर बधाई दी। उनके एलिसेशियन कुत्ते ने मिसेज फ्लूडी का स्वागत किया। कुछ क्षण दोनों एक-दूसरे को सूँघते रहे। सुरोधा जी बोले- "सुनंदन जी, अब तो आप को मिसेज, डागी की वेलकम पार्टी देनी ही होगी।"
सुनंदन बाबू खिलखिलाकर हंस पड़े। कुतिया को साथ लेकर वे आज स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे थे।

पर दो दिन बाद ही लगने लगा कि इस कुक्कुरी ने घर में आफ़त पैदा कर दी है। धर्मभीरु स्वभाव की श्रीमती सुनंदन सहेलियों में कितनी ही आधुनिक बनती हों परंतु उन्हें यह क़तई सहन नहीं था कि कुतिया उनके घर के अन्दर चक्कर काटती फिरे या रसोई-चौके में घुसकर बर्तनों को मुँह लगाए। रात-रात भर भौंककर सिर में दर्द कर देती है। मकान-मालिक ने साफ़ कह दिया कि यदि इस कुतिया को रखना है तो मकान बदल लो। मैं अब इसे एक दिन भी अपने घर में नहीं भौंकने दूँगा।

अंत में, यही निर्णय लिया गया कि इसे सुनंदन जी के कमरे में रोककर रखा जाए। यही सही था कि खिड़की-दरवाजे, बंद होने से आवाज बाहर नहीं गई परंतु उसकी उछल-कूद से मेज, पर रखे फूलदान टूट गए और किताबों का रैक गिर गया।

सुनंदन जी घर में बढ़ते अप्रत्याशित ख़र्च से वैसे ही परेशान थे, ऊपर से इस कुक्कुरी ने नाक में दम कर दिया। उन्होंने बिट्टू से कहा-"दिवाकर को साथ लेकर इसे स्कूटर पर वापस गाँव छोड़ आओ।"
(क्रमश:)

सम्पादक के नाम पत्र

"प्रवासी बूढ़े माता पिता कविता पर एक और प्रतिक्रिया"

सम्पादक महोदय,
हिन्दी पुष्प के अप्रैल, २०१० के अङ्क में श्री राजेन्द्र चोपड़ा की कविता "प्रवासी बूढ़े माता पिता" में वरिष्ठ समुदाय के जीवन का एक पहलू प्रस्तुत किया गया था। पढ़ कर दुख हुआ। सोचा जीवन का यह रूप उनके एक-दो अनुभवों पर आधारित होगा। परन्तु जब मई अंक में श्री अरुण खन्ना ने भी इस बात की पुष्टि की तो अत्यंत आश्चर्य व खेद हुआ।
शायद अन्य देशों में ऐसे किस्से होते हों जहाँ भारतीय समुदाय काफ़ी बड़ा है और वहाँ का रहन-सहन अलग तरह का है, परन्तु ऑस्ट्रेलिया के विस्तृत वरिष्ठ वर्ग में काफ़ी बड़ा सामान्यत: ऐसे उदाहरण कम ही देखने को मिलते है। इसलिए यदि ऑस्ट्रेलिया में ऐसी कोई घटना कहीं देखने को मिले भी तो उसे केवल एक दुखद अपवाद ही मानना चाहिए।
बड़ी उम्र में बच्चों से सम्मान, सत्कार, श्रद्धा पाना जीवन की सबसे अनमोल उपलब्धि होती है। इसके लिए स्वयं जीवन भर परिश्रम करना पड़ता है। बचपन से ही उन्हे बड़ों का सम्मान देने का उदाहरण दे-दे कर सिखाना पड़ता है। जीवन में बिना कुछ किए कुछ भी प्राप्त नहीं होता। केवल बच्चों से ही अपेक्षा रखने से निराशा ही प्राप्त होगी। अपने को सत्कार के लायक बनाएँ, सम्मान अवश्य मिलेगा।
- विजय अग्रवाल

महत्वपूर्ण तिथियाँ

१४ जून (ऑस्ट्रलिया में महारानी एलिज़ाबेथ का जन्मोत्सव), २० जून - (भारत, अमेरिका, कैनाडा, इंग्लैंड आदि देशों में पितृ-दिवस)), ५ जुलाई (सिक्खों के छठे गुरु, हरगोबिन्द जी का जन्म-दिवस), ८ जुलाई (लैलात-अल-मिराज- पैग़म्बर मोहम्मद की 'बुराक,' नामक पक्षी पर एक रात में मक्का से येरुशलम की यात्रा का उत्सव), ११ जुलाई (विश्व-जनसंख्या-दिवस), १३ जुलाई (रथ-यात्रा), १५ जुलाई (धर्म चक्र-परिवर्तन अर्थात् महात्मा बुद्ध के सर्वप्रथम धर्मोपदेश की जयंती)।

सूचनाएँ

१. अगम कुमार निगम द्वारा प्रस्तुत संगीत कार्यक्रम - यादें सितारों की (रविवार, २० जून)
स्थान - स्प्रिंगवेल टाउन हॉल, स्पिंगवेल।
समय - ६.३० बजे शाम से आरंभ
अधिक जानकारी के लिए 'बाबा' से सम्पर्क कीजिये - (०४०२)३१८३२७

२. प्रीत हरपाल तथा दिलजीत दोषांझ द्वारा प्रस्तुत भंगड़ा नृत्य कार्यक्रम (रविवार, २७ जून)
स्थान - मेल्बर्न एक्ज़ीबिशन ऐण्ड कन्वेन्शन सेन्टर **समय** - ६.०० बजे शाम से आरंभ
अधिक जानकारी के लिए नजीब से सम्पर्क कीजिये - (०४२५)७६१११६

३. साहित्य-संध्या - अपने लोग, अपनी बातें (शनिवार, ३ जुलाई)
स्थान - फ़िलिस होर रूम, क्यू सिटी लाइब्रेरी, कोथम रोड और सिविक ड्राइव के नुक्कड़ पर क्यू-३१०१ (मेलवे संदर्भ ४५ डी-६)
समय - रात के ७.३० बजे से १०.३० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए प्रोफ़ेसर नलिन शारदा से (०४०२)१०८५१२ फोन द्वारा सम्पर्क कीजिये -
साहित्य-संध्या की पिछली बैठकों में ली गई फोटुओं तथा 'हिन्दी-पुष्प' के पुराने अंकों के लिये, निम्नलिखित वेबसाइट देखिये - http://sahityasangam.weebly.com/ index.html

४. श्री संकट मोचन महोत्सव - २०१० (शनिवार, २२ अगस्त)
स्थान - डरेबिन आर्टस् ऐण्ड कल्चर सेन्टर, बेल स्ट्रीट तथा सेंट जार्ज स्ट्रीट का नुक्कड,, (मेलवे संदर्भ ३० ई-१)
समय - दोपहर के २.०० बजे से शाम के ६.०० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
महोत्सव के आयोजन में आर्थिक अथवा अन्य प्रकार की सहायता करने के लिये श्रीमती विनीता भाटिया से (०४१२)७७१७७९ पर तथा अन्य जानकारी के लिए डॉक्टर सुनीला श्रीवास्तव को (०४२७) २७४४६२ पर फ़ोन कीजिये अथवा निम्नलिखित पते पर ई-मेल द्वारा संपर्क कीजिये -ashriv@gmail.com

अब हँसने की बारी है

१. पत्नी की याददाश्त

पति (पत्नी से) - प्रिये, क्या यह सच है कि एक बार देखा हुआ चेहरा, तुम कभी नहीं भूलती हो?
पत्नी (पति से) - जी हाँ, यह बात तो सच है, मैं एक बार देखा हुआ चेहरा कभी नहीं भूलती हूँ , लेकिन तुम यह क्यों पूछ रहे हो?
पति (पत्नी से) - बात यह है कि तुम्हारी ड्रेसिंग-टेबल का मँहगा दर्पण मुझसे टूट गया है और नये दर्पण के लिये अभी इंतजार करना पड़ेगा।

२. हिन्दी अध्यापक और विद्यार्थी

हिन्दी अध्यापक (एक विद्यार्थी से) - भाई चारे का प्रयोग करते हुए कोई वाक्य बनाओ
विद्यार्थी - जब दूधवाले से मैंने पूछा कि तुम दूध इतना महँगा क्यों बेचते हो? तो उस ने उत्तर दिया - "भाई चारा महँगा हो गया है।"